7 दिवसीय कोर्स की जिज्ञासा का समाधान

कोर्स का पहला दिन

जिज्ञासा नः 1

क्या मेरा नाम ही मेरी असली पहचान नहीं है ?

समाधानः-

नहीं, यह तो आपके शरीर का नाम है, आप शरीर नहीं आत्मा हैं। यदि हम लोगों से यह प्रश्न करते हैं कि -"आप कौन हैं" तो कोई कहता है मै डाक्टर हूँ, कोई इन्जीनियर, कोई अध्यापक के रूप में उत्तर देता है। वास्तव में शरीर में आने के बाद के ये हमारे व्यावसायिक प्रोफेशनल नाम है, जब "हम" इस व्यवसाय में नहीं थे,लडकपन था, तब भी "हम" विद्यमान था और जब व्यवसाय छोडेंगे, वृद्ध हो जायेगें, तब भी "हम" विद्यमान होगा। वास्तव में हमारी पहचान आत्मा के रूप में है। हमारा शरीर और हमारी सब कर्मेन्द्रिया कर्म करने के साधन हैं।

जिज्ञासा नः 2

अब तक हम जो यह सुनते आये कि मन और बुद्धि आत्मा से अलग हैं और यह सूक्ष्म प्रकृति का बना हुआ सूक्ष्म शरीर है ?

समाधानः-

आत्मा एक चेतन वस्तु है। आत्मा को चेतन इसी कारण कहा जाता है कि वह सोच-विचार कर सकती है, दुख-सुख का अनुभव कर सकती है, अच्छा- बुरा करने का पुरूषार्थ (कर्म) कर सकती है। बल्कि मन स्वयं आत्मा के ही संकल्पों का या दुख-सुख के अनुभव का या इच्छा का नाम है। बुद्धि स्वयं आत्मा के ही निर्णय, विचार, विवेक- शक्ति का नाम है। और संस्कार भी स्वयं आत्मा द्वारा किये हुए अच्छे या बुरे कर्मों के आत्मा पर पड़े प्रभाव का नाम है या इसे ऐसे भी कह सकते हैं, अच्छे या बुरे कर्म करने के बाद आत्मा की जो वृत्ति (व्यवहार) बनती है, उसका नाम संस्कार या स्वभाव है।

अतः आत्मा को मन,बुद्धि एवं संस्कारों से अलग मानना तो गोया आत्मा को चेतन न मानना अर्थात उसे जड़ मानना होगा। चेतन आत्मा में और जड प्रकृति में तो यही अन्तर है कि प्रकृति इच्छा, विचार, प्रयत्न,और अनुभव आदि लक्षण नहीं हैं, पर आत्मा में यह सभी लक्षण है। जब प्रकृति भले-बुरे, सुख- शान्ति आदि का अनुभव

नहीं कर सकती, तो उससे निर्मित यह सूक्ष्म शरीर भला कैसे हो सकता है।

जिज्ञासा नः 3

कई लोग कहते हैं कि मस्तिष्क अथवा ब्रेन ही सोचता, इच्छा करता और शरीर द्वारा काम कराता है। यह बात कहाँ तक ठीक है ?

समाधानः-

मस्तिष्क आत्मा का control room (नियन्त्रणालय) है। जैसे मोटरकार में बैठा हुआ ड्राइवर विभिन्न यन्त्रों से कार चलाता, रोकता है,मोडता,आगे-पीछे करता है। वैसे आत्मा भी मस्तिष्क द्वारा सारे शरीर पर नियंत्रण व किसी भी भाग को कार्य में लगाती है। जैसे बोलने के लिए मुख ही यन्त्र है, उसी प्रकार सोचने, कर्मेन्द्रियो को निर्देशन (Direction) देने के लिए मस्तिष्क ही आत्मा के पास यन्त्र है।

जिज्ञासा नः 4

क्या आत्मा पुनर्जन्म भी लेती है, बहुत से लोग तो पुनर्जन्म को मानते ही नहीं। वे कहते हैं कि दूसरा जन्म किसने देखा, यही जन्म सब कुछ है ?

समाधानः-

निश्चय ही आत्मा पुनर्जन्म लेती है। आप संसार में देखते हैं कि किसी का जन्म सुशिक्षित, सभ्य, कुलीन घर में तो दूसरे का निर्धन, अशिक्षित, असभ्य घराने में। भला सोचिए इसका क्या कारण हो सकता है। बिना कारण के कोई कार्य नहीं हुआ करता, निश्चय ही आत्मा ने कुछ ऐसे कर्म किए होंगे, जिसका फल वह उस जन्म में नहीं भोग सकी। शरीर छोडने के बाद उसने अपने संस्कारों एवं कर्मो के अनुसार अपना फल भोगने के लिए अब पुनर्जन्म लिया।

आज Hipnotheripist (सम्मोहन- चिकित्सा विशेषज्ञ) मनुष्य के पिछले कई जन्मों की जानकारी कर लेते हैं। हम समाचारों में या वैसे सुनते हैं कि चार से दस साल के बच्चे अपने पूर्व जन्मों के बारे में बताते हैं। वे बताते हैं कि उनकी मृत्यु किस कारण से हुई थी। अपने पूर्व जन्म के माता पिता का नाम बताते हैं। इन सबसे यह सिद्ध होता है कि पुनर्जन्म होता है।

कोर्स का दूसरा दिन

जिज्ञासा न.5

जब परमात्मा का कोई रूप(ज्योतिस्वरूप) है, तो भला उसे निराकार (बिना आकार का) कैसे कहा जा सकता है ?

समाधानः-

देखिये, जैसे हम किसी मकान के बारे में कहते हैं, तो निश्चय ही किसी विशेष मकान की तुलना में उसे छोटा या बडा कह रहे होते हैं। स्पष्ट है - छोटा, बडा, पतला, मोटापा आदि सभी विशेषण एक दूसरे की तुलना में प्रयोग किये जाते हैं। इसी प्रकार "निराकार" शब्द भी सूक्ष्माकार और साकार की तुलना में होता है। हमने स्थूल शरीर धारण किया हैं, जिसे साकार कहते हैं। जो सूक्ष्म शरीर वाले देवता ब्रह्मा, विष्णु, शंकर हैं, उन्हें सूक्ष्माकार कहा जाता है। परमात्मा ही एक ऐसी आत्मा है, जिसकी न स्थूल देह है, न सूक्ष्म काया है। इसलिए उसे निराकार(शरीर-रहित) कहा जाता है। अंग्रेजी में Incorporeal अर्थात जिसकी कोई दैहिक आकृति न हो, अंग-प्रत्यंग न हो। परन्तु परमात्मा का रूप है ज्योति-बिन्दु।

जिज्ञासा नः6

क्या परमात्मा केवल अनुभव की चीज है या उसे देखा भी जा सकता है ?

समाधानः-

परमात्मा को किसी ने देखा नहीं है तो शिवलिंग नाम से उसकी यादगार कैसे बनाई गई है ? गीता में उसे "प्रकाशमय" और "दिव्य-रूप वाला" क्यों बताया गया है। लोग उसके दर्शन और साक्षात्कार की कामना क्यों करते ?स्पष्ट है कि परमात्मा का तो रूप है, परन्तु उसे दिव्य-दृष्टि द्वारा ही देखा जा सकता है। तभी दिव्य-दृष्टि को परमात्मा द्वारा प्राप्त होने वाला वरदान माना गया है। स्वयं हमारे ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में हजारों ने परमात्मा के इस दिव्य रूप का साक्षात्कार अथवा अनुभव किया है।

जिज्ञासा नः7

क्या आत्मा कभी परमात्मा में लीन होती है, अभी तक तो हम ऐसा ही सुनते आये ?

समाधान:-

यदि आत्मा परमात्मा में लीन हो जाती तो अविनाशी क्यों कहा जाता। वास्तव में आत्मा ब्रह्म नाम के प्रकाश तत्व में जाकर मुक्ति की अवस्था में वास करती है। उस अवस्था में आत्मा के मन-बुद्धि-संस्कार अव्यक्त अथवा अपने में लीन(Unconscious) अवस्था में रहते हैं। फिर उन्हीं के आधार पर आत्मा इस सृष्टि में आकर शरीर धारण करती है, न कि परमात्मा में लीन हो जाती है।

जिज्ञासा नः8

क्या यह सृष्टि परमात्मा ने रची है ?

समाधानः-

परमात्मा तो निराकार है, उसके कोई हाथ- पाव तो है नहीं है और कोई भी साकार वस्तु बिना इन्द्रियों और स्थूल साधनों के बिना बन नहीं सकती। तब भला कैसे समझा जाए कि निराकार परमात्मा ने साकार सृष्टी रची? यह परमात्मा की रची हुई नहीं हो सकती, क्योंकि परमात्मा की तो अपनी 'काया' ही नहीं है। यदि कहा जाए कि परमात्मा ने पहले अपना शरीर बनाया, बाद में उसने सृष्टि रची, तो यह भी नहीं माना जा सकता, क्योंकि साकार शरीर को बनाने के लिए भी तो साकार साधन तो चाहिए। अतः यह मालूम रहे. ....

"यह सृष्टि अनादि है और प्रकृति पुरूष का खेल है। प्रकृति की अपनी शक्तियाँ और अपने कार्य है। लेकिन परम पुरुष अर्थात

परमात्मा के कर्तव्य दोनों से न्यारे हैं। वह रचयिता है अवश्य, परन्तु उस अर्थ में नहीं जैसा लोग समझते हैं। "परमात्मा के रचना, पालना, विनाश का कार्य कैसे होता है, कल के कोर्स में हम विस्तार से समझेंगे।

कोर्स का तीसरा दिन

आज की इस श्रृंखला में परमात्मा के सर्वव्यापक होने के विषय को प्रमुखता से उठाया गया है , नये जिज्ञासु परमात्मा के सर्वव्यापक न होने की बात आसानी से स्वीकार नहीं कर पाते, हमने यहाँ रोचक प्रश्नों द्वारा इस महत्वपूर्ण विषय को समझाने की कोशिश की है।

जिज्ञासा नः 9

आज तक जो हम सुनते आये कि परमात्मा सर्वव्यापक है। तो सर्वव्यापक का रूप कैसे हो सकता है?

समाधानः

क्या पिता अपने पुत्रों में व्यापक होता है ? परमात्मा तो सर्व आत्माओं का परमपिता है, अतः वह सबमें व्यापक नहीं है। यदि परमात्मा सर्वव्यापक होता तो परमात्मा के गुण सबमें होते। मिठास का तो रूप नहीं है, पर चीनी का तो रूप है। अतः गुण का रूप तो नहीं होता पर गुण वाली वस्तु का रूप तो होता है। इसी प्रकार शान्ति, पवित्रता,आनन्द आदि का रूप नहीं है, पर इन गुणों के सागर परमपिता का तो रूप है, उनका धाम भी है, उनके कर्तव्य भी, उनका गुणवाचक नाम भी है।

जिज्ञासा नः 10

परमात्मा सर्वव्यापक नहीं है, तो सब कुछ जाननेवाला कैसे हो सकता है ?

समाधानः

परमात्मा सर्वोतम शक्तियों से सम्पन्न है, उन्हें वस्तुओं को देखने या व्यक्तियों को जानने के लिए उनमें व्यापक होने की भला क्या आवश्यकता है। इस संसार के हर 5000 वर्ष में पुनरावृति repeat होने वाले इतिहास को भी परमात्मा अनादि निश्चित होने के कारण सदा जानते ही हैं। इस संसार की बनी बनाई भावी को परमात्मा त्रिकालदर्शी होने के कारण सदा जानते ही हैं। मनुष्यात्मा में व्यापक होने से तो केवल वर्तमान को ही जाना जा सकता है। परमात्मा तो त्रिकालदर्शी और विश्व नाटक के अनादि निश्चित एवं पुनरावृत्ति वाला होने के कारण समस्त घटनाओं के सर्वज्ञाता हैं, न कि सर्वव्यापी होने के कारण।

जिज्ञासा नः 11

गीता से कैसे स्पष्ट होता है, कि भगवान सर्वव्यापक नहीं है ?

समाधान:

मनुष्यों के मत पर आधारित शास्त्रों में भले यह कहा गया है कि परमात्मा सर्वव्यापक है। गीता शास्त्र में भगवान कहते हैं कि " मेरा जो स्वरूप है, वह तुम मेरे ही द्वारा जानो। अगर मनुष्य भगवान के स्वरूप को जानते तो वेद शास्त्रों के होते हुए भी भगवान को क्यों अवतरित होना पडता। और वह ऐसा क्यों कहते--यह योग और ज्ञान प्रायः लुप्त हो गया है, इसलिए मैं फिर सुनाने आया हूँ। इससे स्पष्ट होता है कि परमपिता परमात्मा को अवतरित होना पडता है। अवतारवाद के सिद्धांत से स्पष्ट होता है कि परमात्मा सर्वव्यापक नहीं है। भगवान ने यह भी कहा है।

"मैं परमधाम का वासी हूँ, मैं प्रवेश होने योग्य हूँ, मैं दिव्य जन्म लेता हूँ। बाद मै भगवान द्वारा दिये गये ज्ञान को लिपिबद्ध किया गया और मनमाने ढंग से परिवर्तन होते गये।

जिज्ञासा नः12

यह बात तो ठीक लगती है कि परमात्मा सर्वव्यापक नहीं है, पर लोग तो कहते हैं कण-कण में भगवान होते हैं ?

समाधानः

आप सोचेंगे तो पायेगे कि ऐसा सोचना तो परमात्मा का अपमान करना होगा। सर्वव्यापक मानने का अर्थ है सर्प, बिच्छू, कुत्ते, सूअर, बिल्ली आदि सभी निकृष्ट योनियों में परमात्मा को व्याप्त होना मानना है। जिन पत्थरों, धूल कणों को मनुष्य रौंदकर चला जाता है, जिन गन्दी चीजों से मनुष्य घृणा करता है, उसमें परमात्मा को देखना हमारी बुद्धि के दिवालियेपन की निशानी है।

कोर्स का चौथा दिन

जिज्ञासा नः13

क्या परमात्मा ही सब कुछ करा रहा है ?

समाधानः

संसार में जो हर तरह के अपराध लूट, चोरी हो रही, तो यह सब क्या परमात्मा ही करता या कराता है। क्या इससे परमात्मा की महानता सिद्ध होती है। अगर परमात्मा ही यह सब अपराध कराता है, तो लोगों को दण्ड क्यों मिलना चाहिए। खूनी को फाँसी पर क्यों लटकाना चाहिए। परमात्मा बैठकर क्या पत्ता हिलायेगा। परमात्मा जब सर्व महान है, तो उसके कर्तव्य भी महान होगे। भगवान ने कहा मेरे कर्तव्य दिव्य होगे और भगवान को तो शिव अर्थात कल्याणकारी कहा जाता है। वह तो रचना, पालना और विनाश कराता है।

जिज्ञासा14:-

शास्त्रवादी लोग कल्प की आयु चार अरब वर्ष से भी अधिक और कलियुग की आयु अभी 4 लाख से कुछ अधिक बता रहे ?

समाधानः-

यदि कल्प की आयु अरबों वर्ष होती तब तो परमपिता परमात्मा सृष्टि के आदि, मध्य अन्त के इतिहास का भी ज्ञान नहीं दे सकते थे। जन्म- मरण के चक्कर में दुःख भोगते - भोगते मनुष्यात्मा का तो क्या बुरा हाल हो जाता। यह विचार करने योग्य बात है कि 2,000 वर्षों में ही ईसाई धर्म के लोगों की संख्या दो अरब के लगभग हो गई है। यदि कल्प की आयु अरबों वर्ष होती तो पहले धर्म आदि सनातन देवी देवता धर्म वालों की संख्या तो आज अनगिनत होती। पर ऐसा नहीं है। शास्त्रवादियों और संन्यासियो ने कल्प की आयु के बारे में मिथ्या मत संसार में फैलाया है। इधर सृष्टि के महाविनाश के लिए एटम बम और हाइड्रोजन और प्रकृति विकराल रूप धारण करने जा रही। उधर लोगों ने मनुष्यों को यह उल्टा मत देकर सुला दिया है कि "कलियुग तो अभी बच्चा है" इसके तो लगभग 4,27,000 वर्ष शेष हैं। कुछ भी हो कल्प की आयु का रहस्य तो उस स्थापना,विनाश और पालना का कर्तव्य को कराने वाले परमात्मा ही बता सकते हैं। कोई ज्ञानी या संन्यासी इसका तो सत्य ज्ञान दे नहीं सकते। आप विवेक का प्रयोग करेंगे तो देखेंगे कि 5,000 वर्ष पहले महाभारत काल में जैसे मूसल और ब्रहमास्त्र बने थे, अब फिर हूबहू बन रहे हैं और परमात्मा अवतरित होकर फिर से गीता ज्ञान दे रहे हैं ।

जिज्ञासा 1५:-

संन्यासी व अन्य लोग भी कहते हैं कि यह संसार बना ही नहीं, यह संसार मिथ्या है,यह स्वप्न-मात्र है ?

समाधान:-

परन्तु परमपिता परमात्मा ने कहा है कि यह सृष्टि मिथ्या नहीं है,बल्कि सत्य है। इसका तो एक नियमित इतिहास और भूगोल है। उन्होंने हमें इस रचना के तीनों कालों के मुख्य मुख्य वृत्तान्त समझाये है,जिन्हें जानना आवश्यक है। भगवान ने इसके इतिहास को एक उल्टे वृक्ष से उपमा दी है, जिसे "मनुष्य सम्प्रदाय का वृक्ष" या कल्पवृक्ष भी कहा जाता है। इस कल्पवृक्ष के रहस्य को समझ लेने पर सृष्टि सम्बन्धी यह आरोप गलत लगते हैं।

जिज्ञासा न:1६-

हमने बहुत सी आत्माओं के सम्बन्ध में सुनते आये कि उन्हें जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति मिली। क्या वास्तव में आत्मा को मोक्ष, निर्वाण या मुक्ति मिलती है ?

समाधान:-

यदि मुक्ति के बाद आत्माएँ इसी तरह ब्रह्मलोक में सदा के लिए ही रहे, तो एक दिन सृष्टि का खेल ही खत्म हो जाएगा। क्योंकि कोई

नई आत्मा तो बनती नहीं है। हार-जीत की तरह आत्मा बन्धन में आयेगी, फिर शरीर त्यागने अर्थात मुक्त होने के बाद फिर बन्धन में आयेगी। पूरी तरह से तो कोई भी मुक्त नहीं है, यहां तक कि परमात्मा को हर 5,000 वर्ष में आना पडता है। इसी तरह ईसामसीह आदि महान आत्माएँ भी पुनर्जन्म में हैं।

जिस प्रकार बच्चा खेल में थककर और हारकर कुछ उदास हो जाता है और सो जाता है, परन्तु सदा सोया भी नहीं रहना चाहता बल्कि फिर उठकर खेल करना चाहता है। ठीक उसी प्रकार आत्मा भी इस सृष्टि रूपी नाटक में माया से हारकर तथा अनेक जन्म कर्म करते-करते जब दुःखी होती है और बन्धन अनुभव करती है, तब मुक्ति की इच्छा करती है, फिर एक समय आने पर वह पुनः इस संसार में आकर खेल खेलना चाहती है।

कोर्स का पांचवां दिन

जिज्ञासा 17:-

सृष्टि चक्र के सम्बन्ध में अनेक भविष्यवाणियां आई, इसके रहस्य को हम विस्तार से जानना चाहेंगे ?

समाधान:-

"सृष्टि चक्र का रहस्य" ~ ~जिज्ञासा और उनका समाधान~~ हम इसके बारे में आप सबको विस्तार से समझाते हैं।

वर्तमान समय की पुकार क्या है, समय हम से क्या चाहता है, क्योंकि समय के सम्बन्ध में कई भविष्यवाणी सुनते आ रहे हैं,माया कॅलेंडर में 2012 में महाप्रलय कि स्थिति बताया गया, कोई कहता आया है 2004 में और 2012 में कोई कहता है प्रकृति की प्रलय आयेगी। कई बातें आती हैं। नास्त्रेदम ने यह कहा है, तो दूसरे ने यह कहा है,। हम यह गीत भी सुनते रहे कयामत आने वाली है, गुनाहों से......।

परन्तु इन सबसे हटकर जो कालचक्र का रहस्य परमात्मा ने बताया है, वही सटीक है, पूर्णतः सत्य है,उन्होंने यही कहा हुआ है। प्रलय तो होने वाली नहीं। परिवर्तन तो निश्चित है, क्योंकि परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है, यह परिवर्तन समय का है,इसलिए इसको कहा गया

"कालचक्र"। चक्र अर्थात जो निरन्तर चलता रहता है। जिस तरह ऋतुओं का काल चक्र होता है। दिन और रात का चक्र ही ले लो, चार अवस्थाएं होती है -सुबह, दोपहर, शाम, रात्रि। मनुष्य के जीवन की चार अवस्थाये बचपन, युवा, गृहस्थ, बुढापा। इसी प्रकार कालचक्र में चार अवस्थाएं- सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर, कलियुग, कलियुग के बाद फिर क्या आयेगा, सीधी सी बात सतयुग। अगर हम यह समझे कि इतने पापाचारी युग के बाद एकाएक सतयुग में कैसे बदल जायेगा, इसके लिए तो प्रलय होनी चाहिए, पर ऐसा नहीं है, जरा सोचिये एकदम प्रलय हो जाये तो उत्पति कहा से होगी और कैसे होगी ?इसलिए यह एक महान युग परिवर्तन का युग है,जो घोर कलियुग रात्रि को सुनहली सुबह मे परिवर्तित कर देगा।

जिस प्रकार एक वर्ष में बारह महीने, एक दिन में चौबीस घंटे होते है ऐसे ही दूसरे उदाहरण भी दिये जा सकते हैं उसी तरह कालचक्र की भी एक अवधि है। यह सृष्टि चक्र 5000 वर्ष का है। जिसमें प्रत्येक युग 1250 वर्ष का है। चारों युगों को पूरा करने में पांच हजार साल लगते हैं। यह बात सुनते ही हमारे मन में कई सवाल उठते हैं। कहां किस ग्रंथ में, किसने ऐसा कहा है,पर बहुत कुछ स्पष्ट नहीं है। जिस तरह चौबीस घंटे को हमने स्वीकार कर लिया, जिस तरह एक दिन में चौबीस घंटे, एक वर्ष मे 365 दिन इसी तरह और भी बातें स्वीकार्य करते आये। तो 5000 वर्ष में सवाल क्यों ? नहीं मानोगे तो दुःखी कौन होगा, न मानने वाला। 5000 वर्ष का चक्र अनगिनत बार इसी तरह घूमा है। अगर आर्कालाजी दिखाती है धरती के अन्दर कई पत्थर

करोड़ों साल पहले वाले मिले हैं, तो मिले होंगे, क्योंकि सृष्टि चक्र तो करोड़ों साल से चलती आयी है। दिन और रात का यह 24 घंटे का चक्र कितनी बार घूम गया, कितने साल बीते,फिर भी हम यह मानते हैं कि जनवरी आयेगी। हमारे ग्रन्थों मे लिखा है कि जब घर-घर में महाभारत होगा तो समझना महाभारत आ गया।

यदा-यदा हि धर्मस्य...... कहा है तो धर्म की ग्लानि का समय है कि नहीं। 5000 वर्ष पहले वाला महाभारत फिर से आ गया। जो लोग अभी द्वापर से मानते है, उसका जवाब यह है कि गीता में भगवान ने कहा है कि "अधर्म का विनाश और सतधर्म की स्थापना करता हूँ। तो क्या द्वापर के बाद घोर अधर्म की स्थापना हुई? नहीं। कलियुग के अन्त में अधर्म का विनाश होगा तो सतधर्म आ सकता है।

जिज्ञासा नः18

आप कहते हैं, सृष्टि का महाविनाश निकट है और एक बहुत बडा युगपरिवर्तन समीप है, पर हम इसे व्यावहारिक ढंग से कैसे मान लें, जबकि बहुत से लोगों को हमने यह कहते हुए सुना है कि कलयुग तो अभी बच्चा है ?

समाधान-

शास्त्रों में तो यह लिखा है कि कलयुग के अभी 40 हजार वर्ष शेष हैं। सोचने की बात है अगर कलयुग के अभी इतने वर्ष बाकी मान

लिए जायें, तो जब वह बूढा होगा तो दुनिया का क्या हाल होगा,उसकी कल्पना नहीं की जा सकती। कहते हैं, संसार में इतने मिसाईल, परमाणु बम तैयार हैं, कि इस संसार को 39 बार खत्म किया जा सकता है। वैज्ञानिक दृष्टि से देखें तो ओजोन परत में छेद के कारण सूर्य की पराबैंगनी किरणें (AV)सीधे पृथ्वी पर आ रही, जिनसे उत्पन्न बीमारियों का कोई इलाज नहीं है। इसी तरह विश्व-व्यापी तापमान वृद्धि अर्थात ग्लोबल वार्मिंग का खतरा दिनों दिन बढता जा रहा, परिणामस्वरूप उत्तरी- दक्षिणी ध्रुव (North- South Pole) की बर्फ पिघलने लगी है। जिसके कारण समुद्र का जलस्तर बढ रहा है। वैज्ञानिको ने दावा किया है, कि इसी तरह बर्फ पिघलती रही तो निकट भविष्य में समुद्रतटीय शहर डूब जायेगें। ग्रीन हाउस गैसों के अधिक उत्सर्जन के कारण भी पूरे विश्व के औसत तापमान में लगातार वृद्धि बहुत बडा खतरा बना हुआ है। ग्रीन हाउस प्रभाव के सामान्य रहने पर औसत तापमान -18° से. होता है, जो वर्तमान में + 15° सेल्सियस तक पहुंच चुका है। इस तरह प्राकृतिक असंतुलन की गंभीर स्थिति पैदा हो गई है, जिसके कारण प्रकृति अपना कहर ढाने लगी है। जनसंख्या विस्फोट एक बहुत बडी समस्या का रूप धारण कर ही चुकी है।

इन सारे वैज्ञानिक तथ्यों से एक बात तो स्पष्ट है कि एक महान परिवर्तन सामने खडा है। परमात्मा ने कहा है, विनाश तो पूरी तरह से होगा नहीं, एक सतयुगी दुनिया की स्थापना के रूप में युगपरिवर्तन होगा।

जिज्ञासा नः19

बिग-बैग थ्योरी क्या है या उसी तरह जो यह बात कही गई है कि किस तरह से पृथ्वी का जन्म हुआ था, तो क्या वैसे वह नहीं जन्मी थी ?

समाधानः-

पहले हमें बताया गया था कि पृथ्वी चपटी है और कितने समय तक यही सोच चलती रही, विज्ञान ने एक दिन बताया कि, पृथ्वी चपटी नहीं गोल है। इसी तरह समय चक्रीय है, इसके ऊपर की बहुत सारी थ्योरीज हुई, लेकिन इन थ्योरीज को अभी भी संदिग्ध माना जा रहा है। और वो भी वैज्ञानिक ही मान रहे हैं,क्योंकि लगातार रिसर्च जारी हैं। हर थोडे समय के बाद आप रिसर्च करेंगें तो आपको नये-नये साक्ष्य और तथ्य मिलेगे। जिससे आपकी पहले की धारणाएं और विश्वास बदलने लगेगे।

कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में दो वैज्ञानिको ने बिग बैग थ्योरी (सिद्धांत) की मीमांसा (contradict) की। इस थ्योरी को चैलेंज करते हुए उनका कहना है कि समय अविनाशी है वो न तो क्रिएट न कभी समाप्त होगा। जैसे दिन और रात का चक्र,ऋतुओं का चक्र वैसे ही एक उससे थोडा बडा चक्र ये विश्व, ये कब शुरू हुआ या ये कभी शुरू भी हुआ था या नहीं और क्या कभी यह खत्म भी होने वाला है, इन सवालों के जवाब मिल जाते हैं तो भय समाप्त हो जाता है। समय

चक्रीय है और विज्ञान ने भी इसको अब खोजना शुरू कर दिया है, कि ये विश्व नाटक भी एक समय का चक्र है। चक्र है इसलिए उसकी न कभी शुरूआत है, न ही उसका कभी अन्त है।

वास्तव में जो इस ड्रामा का डायरेक्टर है, या जो इस ड्रामा से पूरी तरह अलग या साक्षी होकर ड्रामा को देख रहा,वह निराकार परमात्मा सृष्टि पर अवतरित होते हैं, तब स्वयं हमें समय का परिचय देते हैं, कि समय भी एक चक्र है। जिसे हम कालचक्र कहते आये हैं।

जिज्ञासा नः२०

स्वर्ग और नरक वास्तव में किसे कहेंगे ? किसी मनुष्य के मरने पर यह जो कहा जाता है, कि " वह स्वर्ग सिधारा"-ऐसा कहना ठीक है ?

समाधानः-

सतयुग और त्रेतायुग की सृष्टि में सम्पूर्ण सुख और शांति होती है। और "यथा राजा-रानी तथा प्रजा", सभी दैवी गुण सम्पन्न होते हैं। इसलिए स्वर्ग कोई ऊपर नहीं है, बल्कि सतयुगी और त्रेतायुगी सृष्टि ही द्वापर और कलियुगी सृष्टि की तुलना में चारित्रिक व सुख आदि की दृष्टि से स्वर्ग या बैकुण्ठ है। जबकि द्वापर और कलियुगी सृष्टि ही पतित और दुःखी है, इसीलिये नरक है।

अगर मरने के बाद सभी स्वर्ग सिधार जाते तो अब तक स्वर्ग में भी भीड हो जाती। और वहाँ भी जनसंख्या वृद्धि के कारण ऐसे दुख होता। वास्तव में द्वापर और कलियुग में जब आत्माये शरीर छोडती

है, तो वह इसी सृष्टि में पुनर्जन्म लेती हैं, क्योंकि यहां के लोगों से उनका कर्म खाता जुटा होता है। उनकी कुछ वासनाएं और विकार भी रहे होते हैं। इसलिए इन दो युगों में स्वर्गवासी कहना तो बिल्कुल गलत बात है। वास्तव में ऐसा लोग सम्मान-भाव देने के लिए कहते हैं।

कोर्स का छठवां दिन

जिज्ञासा नः21

"जीते जी मरना" इसके बारे में हम कई बार सुन चुके,आखिर यह कैसा मरना होता है ?

समाधान:-

जीते जी मरने का अर्थ है कि प्राणी का अन्त होने से पहले अर्थात अभी इस दुनिया को देखते हुए न देखना, इसके विषय विकारों से तथा मोह ममता से निकलकर अनासक्त भाव को धारण करना तथा ज्ञान द्वारा आत्मा रूपी दीपक को जगाना। अतः अपनी देह को भूलकर देह के सर्व सम्बन्धियो से बुद्धि की लग्न तोडकर परमपिता परमात्मा से आत्मिक नाता जोडना।

जब मनुष्य मरने लगता है, तो लोग उसके मुख में गंगा-जल डालते हैं और गीता सुनाते हैं। परन्तु कलियुग का अन्त होने से सबका अन्तिम समय है, अब परमात्मा जो गीता ज्ञान सुना रहे, उस गंगाजल से जीवनमुक्ति का अधिकारी हमे बन जाना है।

जिज्ञासा न: 22-

हिन्दू धर्म के संस्थापक और समय का तो किसी को पता नहीं। लोग कहते हैं यह अनादिकाल से चला आ रहा है,पर इसका स्थापक और स्थापना काल तो होगा ही, चाहे यह कितना प्राचीन क्यों न हो ?

समाधानः-

देखिए,आज हिन्दू धर्म के लोगों की क्या हालत हुई कि वे अपने धर्म का वास्तविक नाम, संस्थापक, समय को भी नहीं जानते ? अन्य धर्म के लोग इन सब बातों को जानते हैं। परन्तु सबसे प्राचीन होने के कारण लोग सब भूल गये। अब परमपिता शिव ने सृष्टि चक्र और कल्पवृक्ष का राज समझाते हुए बताया कि हमारे धर्म का वास्तविक नाम है-"आदि सनातन देवी देवता धर्म"। इसे 'आदि' इस कारण से कहा जाता है कि यह सतयुग के आदि से चला आ रहा है। "सनातन" इसलिए कहते हैं, क्योंकि कलियुग के अन्त में जब इस धर्म की पूर्णतः ग्लानि हो जाती है तो भगवान इसकी पुनः स्थापना करा देते हैं, इस तरह सृष्टि का महाविनाश होने पर भी इसका नाश नहीं होता। "देवी देवता" इसलिए जुडा है कि इस धर्म के आदि काल अर्थात सतयुग, त्रेतायुग के लोग देवी-देवता थे और दिव्य गुणों से युक्त थे।

परन्तु आज लोग इन रहस्यों को न जानने के कारण लगभग 2500 वर्ष पूर्व फारस वासियों द्वारा दिये हिन्द नाम जो बाद में हिन्दू बन गया, उसे ही अपने धर्म का वास्तविक नाम समझ बैठे।

जिज्ञासा नः23

जैसा कि आज के कोर्स में बताया कि गीता- ज्ञान परमात्मा शिव ने दिया, परन्तु ऐसा क्यों न मान लें कि परमात्मा शिव ने श्रीकृष्ण के

तन में प्रवेश करके द्वापर में यह ज्ञान दिया। दूसरे श्रीकृष्ण पहले या श्रीराम ?

समाधानः-

किंचित सोचिए कि अगर भगवान का दिव्य अवतरण द्वापर के अन्त में हुआ होता और तभी उन्होंने अधर्म का विनाश और दैवी धर्म की स्थापना की होती तो द्वापर के बाद सतयुग आ जाना चाहिए था। पर उसके बाद तो कलियुग आता है। यदि कलियुग अर्थात पतन का युग ही आना था, तो भगवान के दिव्य अवतरण और उनके कर्तव्य का लाभ ही क्या हुआ, भगवान की महिमा का क्या हुआ। उनके अवतरण के बाद सृष्टि में पवित्रता, सुख और शांति का युग सतयुग आना चाहिए। कहा भी गया है-"यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवतिभारत, अभ्युत्थानम् अधर्मस्य.....। अतः भगवान का अवतरण धर्म की अति ग्लानि के समय कलियुग में होता है और उनके कर्तव्यों के बाद सतयुग का आरंभ होता है।

सृष्टि चक्र की कहानी में आपने जाना सतयुग में मनुष्य सोलह कला सम्पन्न और त्रेतायुग में मनुष्य चौदह कला सम्पूर्ण अवस्था वाले होते हैं। श्रीकृष्ण का सतयुग में प्रथम जन्म होता है। राम का नौवां जन्म त्रेतायुग के आरम्भ में होता है। अतः स्पष्ट है कि श्रीकृष्ण 16 कला सम्पन्न होने से पहले हुए।

जिज्ञासा नः24-

श्रीकृष्ण के बारे में जो यह वर्णन मिलता है कि उनकी 16,108 पटरानिया थी, उसने गोपियों के चीर चुराये, माखन चुराने या गाय चराने आदि,आदि, क्या ये बातें गलत हैं या इनमें कुछ तथ्य है ?

समाधानः-

वास्तव में यह कलंक मिथ्या है,बात कुछ और है। देह को आत्मा का वस्त्र भी कहा गया है,गीता के भगवान शिव ने कल्पवृक्ष का ज्ञान देकर आत्माओं के शरीर रूपी वस्त्र को हर लिया था, अर्थात उन्हें विदेही (देह अभिमान से रहित) कर दिया था। पर अज्ञान के कारण लोगों ने सबसे श्रेष्ठ चरित्र वाले कृष्ण पर गोपियों के वस्त्र चुराने का मिथ्या आरोप लगाया। श्रीकृष्ण विश्व महाराज थे, भला वे गाय क्यों । इसी तरह सतयुग में सब कुछ प्रचुर मात्रा मे था घी, दूध की नदियाँ बहती थी, वे माखन क्यों चुरायेगे।

108 आत्माये इस संगम पर माया से सम्पूर्ण विजयी होती है। वे स्वर्ग में पटराणा या पटरानी बनती हैं। यही विश्व महाराजा या विश्व महारानी का पद प्राप्त करती है। इन 108 आत्माओं के स्वर्ग में जो निकट के मित्र सम्बन्धी कुटुम्बी होते हैं, वह 16,000 होते हैं। वे भी संगम पर अत्यंत पावन बनते हैं। अतः108 के साथ 16,108 की संख्या भी शुभ मानी जाती है। परन्तु बाद में इस वास्तविकता को न जानने के कारण यह भ्रान्ति प्रसिद्ध हो गई की श्रीकृष्ण की 16,108 पटरानिया थी।

कोर्स का सातवां दिन

जिज्ञासा नः25-

राजयोग का अभ्यास शुरू करते ही हम अनुभूति Rializetion की स्टेज पर पहुंच सकते हैं, या समय लगता है ?

समाधानः-

कुछ लोगों को तो राजयोग का अभ्यास शुरू करते ही Rializetion के स्तर पर पहुंच जाते हैं, पर ज्यादातर को इन चार स्तर से गुजरना पडता है........

1.प्रारम्भ (Initiation) -

इसकी शुरुआत ज्ञान के द्वारा की जाती है। ये वो ज्ञान है जो स्वयं परमात्मा ने दिया है , जिसके लिए किसी भी तर्क की आवश्यकता ही नहीं है , जैसेकि- उसने बताया हम सब आत्माएं हैं। वो सर्वज्ञ तो है लेकिन सर्वव्यापी नहीं, आदि।

2.ध्यान (Meditation)-

इसमें हम एक लहर में चिंतन करते हैं । जैसेकि- आत्मा के बारे में चिंतन , परमात्मा के बारे में चिंतन की वे तो महाज्योति हैं, उनसे हमारे सम्बन्ध के बारे में चिंतन करना कि वे तो मेरे बाबा हैं,परम सतगुरु हैं ।

3.एकाग्रता (Concentration)-

हम परमात्मा के स्वरुप पर मन को एकाग्र करते हैं | इसे visualization भी कहते है । इस स्टेप की धीरे - धीरे practice बना लें , ज़बरदस्ती करने की आवश्यकता नहीं।

4.अनुभूति(Realization)-

आत्मा के मौलिक गुणों के अनुभव को realization कहते हैं । जब हम उस सुप्रीम के साथ योग लगाते हैं तो आत्मा में उनके ही जैसे गुण आने लगते हैं । मन को शान्त करने हेतु सुंदर विचारों का प्रयोग करें। स्वमान का चिंतन करें।

जिज्ञासा नः26-

राजयोग के अभ्यास से निर्भय और निश्चिंत जीवन प्राप्त करने के कुछ सरल उपाय बताये ?

समाधानः-

राजयोग के अभ्यास द्वारा बनें निर्भय और निश्चिन्त हो सकते हैं। मन के प्रकम्पन vibration ही हमें दूसरों के पास या उनसे दूर ले जाते हैं । हम vibrations के सिद्धांत द्वारा पड़ोसियों की भी समस्याओं को दूर कर सकते हैं। सवेरे उठ स्वमान करें - मैं आत्मा मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, फिर उनको भ्रकुटी के बीच चमकती आत्मा

देख संकल्प करें ये तो मेरे गुड friends हैं , मेरे शुभचिंतक हैं , हमारे बीच सब कुछ ठीक हो जाएगा ।   spiritual power आपको ऐसे संकल्प करने में मदद करेगी । परमात्मा से बहुत अच्छा connection जोडें और उन्हें भी मदद देने के लिए आग्रह करें।

मन में भय का कारण आपके पूर्व जन्म या इस जन्म के कुछ बुरे अनुभव हो सकते हैं | इसको दूर करने के लिए 108 दिन तक स्वमान की practice करें - मैं आत्मा अजर , अमर , अविनाशी हूँ ,मैं आत्मा शिव शक्ति हूँ ,शिव की शक्तियाँ मेरे पास हैं। सुबह उठते ही कम से कम सात बार संकल्प करें - मैं आत्मा मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ , निर्भय हूँ। घर से कहीं बाहर जाने से पहले संकल्प करें - मेरे साथ सर्वशक्तिवान है , उनकी छत्रछाया में मैं सुरक्षित हूँ । कुछ विशेष प्राप्ति के लिए मास्टर सर्वशक्तिवान के स्वमान का उपयोग करें। भगवानुवाच- जो मास्टर सर्वशक्तिवान का अभ्यास करते हैं वे अपनी संकल्प शक्ति द्वारा बहुत कुछ कर सकते हैं।

जिज्ञासा नः27

जीवन की आम समस्याओं कलह, मानसिक समस्याओं से राजयोग द्वारा छुटकारा कैसे पाया जा सकता है ?

समाधान:-

क्रोध से बचाव Irritation- माता-पिता का अपने बच्चों को मारना एवं उनसे नाराज़ होना स्वाभाविक सा हो गया है । इस समस्या का समाधान है कि वे अपने बच्चों को आत्मिक दृष्टि से देखना प्रारंभ करें। स्वमान का अभ्यास करें - मैं एक शान्तस्वरूप आत्मा हूँ । उनकी activities को enjoy करें , धैर्यतापूर्वक व्यवहार से बदलाव लाने का प्रयास करें।

एकाग्रता की कमी- आज mobile, internet , t.v. , के प्रयोग से बच्चों की मानसिक शक्ति क्षीण होती जा रही है । इसलिए इनका पाजिटिव उपयोग ही करें और सवेरे active subconscious mind को command दें की मैं बुद्धिमान हूँ , चरित्रवान हूँ , एकाग्रचित्त हूँ।

Spiritual life और पढाई में बैलेंस - मन को लाइट रखने और स्वमान के अभ्यास से दोनों में ही सफलता प्राप्त की जा सकती है। पढाई को enjoy करें ,इससे उसमें कुशलता बढ जाएगी। खाली समय में राजयोग का अभ्यास करें , स्वमान का अभ्यास करें - मैं आत्मा मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ|

जिज्ञासा न: 28

5000 वर्ष के सृष्टि नाटक चक्र कैसे फिरता है, इसके बारे में संक्षेप में बताइए ?

समाधान -

आदि सनातन देवी देवता धर्म(सतयुग व त्रेतायुग) - शुरूआत में १६ कला अर्थात् शत प्रतिशत गुण सम्पन्न से यह दुनिया शुरू होती है। मनुष्य आयु १५० वर्ष। अन्त तक २ करोड़ महान् आत्मायें सतयुग में आती हैं। जिसमें १६१०८ महान आत्मायें शिव की प्रिय/श्रीकृष्ण की प्रिय आत्मायें होंगी। शेष ३१ करोड़ महान् आत्मायें सतयुग में जन्म लेने वाले श्रेष्ठ आत्मा मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम जी के राज्य से आयेंगी। ध्यान रहे श्रीकृष्ण राम नहीं। यहां भी अन्त तक ३३ करोड़ आत्मायें देवी देवता पद की अधिकारिणी होंगी। दूसरे त्रेतायुग युग के अन्त तक 8 कला ही रह जायेगी। इन दो युगों में परमात्मा की पूजा व भक्ति नहीं हुआ करती है।

द्वापर एवं कलियुग - विप्लव काल में सिन्धु आदि नदी घाटी सभ्यताओं के बारे में हुई खुदाई से यह ज्ञात होता है कि उस समय की नगर योजना, स्नानागार आदि कितने सुन्दर थे। इस तरह शिव बाबा द्वारा स्थापित धर्म का यहीं लोप हो जाता है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह विदित होता है कि भारत २४-२५ सौ साल पहले १६ महाजनपदों में विभाजित था। इस तरह त्रेतायुग के बाद धर्म संस्थापकों का समय, जिसमें सर्वप्रथम इस्लाम, बौद्ध,जैन, सिक्ख आदि धर्म संस्थापक व धर्मावलंबी आत्माओं का परमधाम से धरा पर अपने-अपने समय पर आगमन होता है।

परमधाम से पहली बार(आदि) इस धरा पर आने वाली सभी आत्मायें न केवल सम्पूर्ण पवित्र होती हैं अपितु इस कलियुग के अंत में परमधाम जाने वाली सभी आत्मायें भी पवित्र होकर ही परमधाम जाती हैं। द्वापर में सर्वप्रथम संस्कृत भाषा का उदय, फिर क्रमशः पालि,प्राकृत,अपभ्रंश और लगभग १००० वर्ष पूर्व हिन्दी भाषा बोली जाती है। मनुष्य आत्माओं द्वारा मानवों द्वारा रचित वेदों को ईश्वरीय वाणी कहा गया। उपनिषद,पुराणों ईश्वर के बारे में नेति नेति, ईशावास्यम् सर्वविदं अर्थात् ईश्वर सब जगह है कहकर कच्छ मच्छ आदि में ईश्वर को अज्ञानतावश कहकर ग्लानि की गई। द्वापर लगभग ७५० ईसा पूर्व तक एकमात्र भक्ति शिव के शिवलिंग की हुआ करती है, इस तरह ८ कला से ४ कला में सिमटती हुई दुनिया। द्वापर में यह दुनिया भारतवर्ष से ईरान,ईराक,यूनान आदि देश,यूरेशिया (एशिया- यूरोप) महाद्दीप तक। श्रीमद्भागवत ग्रंथ में श्रीकृष्ण के साथ गोपियों का उल्लेख मिलता है पर राधा का नहीं। राधा का सर्वप्रथम उल्लेख ७ वीं सदी के संस्कृत के कवि जयदेव के 'गीत गोविंद' ग्रंथ में मिलता है। इसी के आसपास भारतवर्ष में राधा कृष्ण साथ ही अन्य देवी देवताओं की भक्ति प्रारंभ हो जाती है। पुनः ७५० ईसा पश्चाद् भारत का पराभव होते हुए सोने की चिड़िया मिट्टी बनते हुए पूरी दुनिया अब वर्तमान में १-२ कला तक सीमित रह जाती है। स्वर्ग में जहां योगबल सें संतानोत्पत्ति। वहीं दूसरी ओर ईसा से 500 वर्ष पूर्व कामविकार से संतानोत्पत्ति होने लगती है।

इस तरह हर ५००० वर्ष उपरांत इस सृष्टि चक्र के इतिहास,भूगोल, मनुष्य आत्माओं के पाप पुण्य के हिसाब-किताब की पुनरावृत्ति होती रहेगी। हर 5000 वर्ष वह परवरदिगार GOD IS LIGHT प्रिय शिव बाबा पुनः ब्रहमा मुख से पठित मुरली सुनाकर श्रीकृष्ण जी की तथाकथित वंशी को अमर बना देंगें।

--